# आपातकाल में सृजन फुलवारी

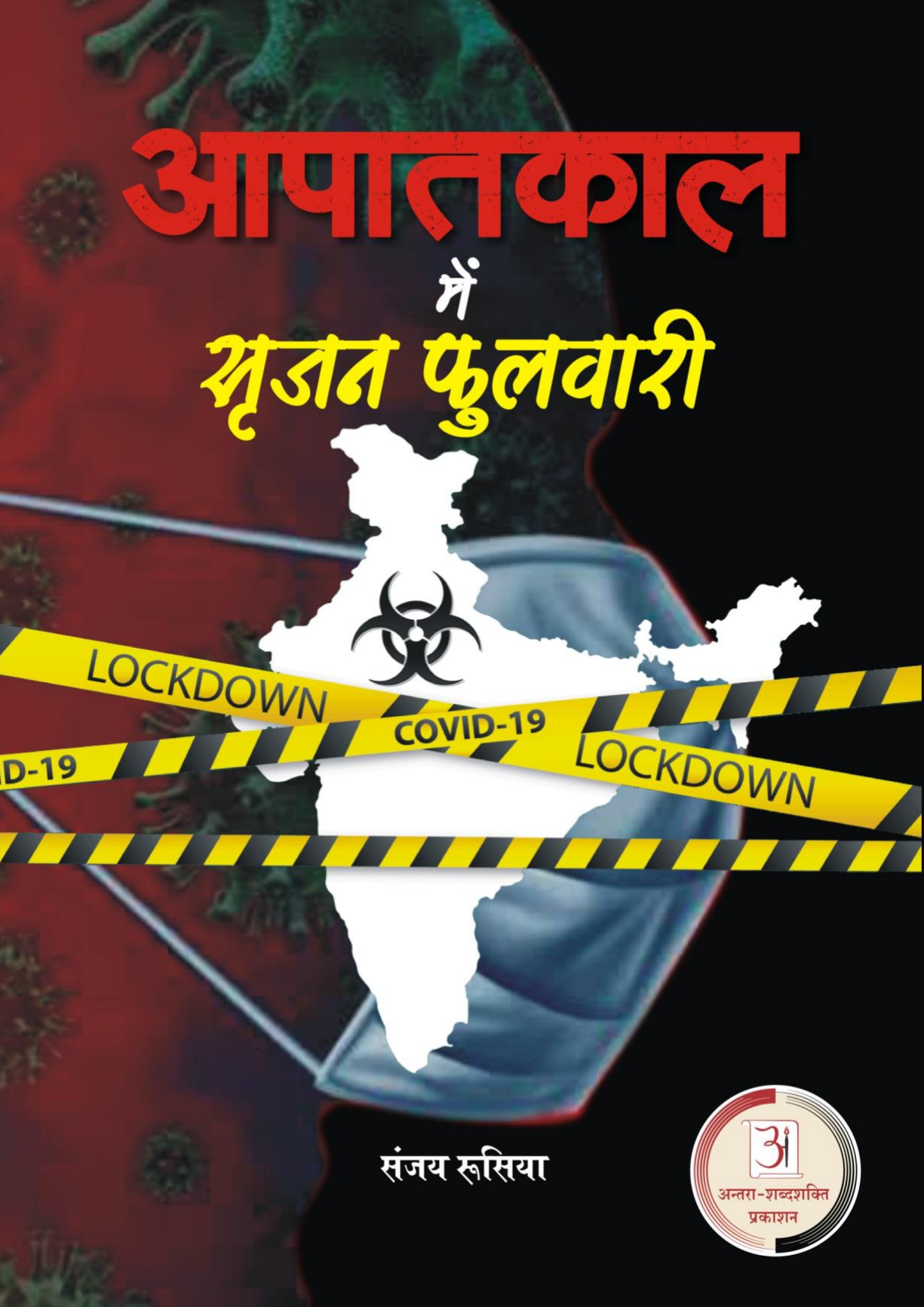


संजय रूसिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

# आपातकाल में सृजन फुलवारी

संजय कुमार रूसिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-193-0
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चैक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www-antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, संजय कुमार रूसिया
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
**THE BOOK WRITTEN BY SANJAY KUMAR RUSIA**
**वैधानिक चेतावनीः**- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

# आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुजर रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (COVID19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय श्समकित सुरानाश् से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय "संदीप सोनी" ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सजा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | गणेश वंदना | 6 |
| 2. | लेखनी | 7 |
| 3. | कलम में ताकत | 8 |
| 4. | रिश्ते | 9 |
| 5. | माँ | 10 |
| 6. | पिता | 11 |
| 7. | भाई | 12 |
| 8. | बहन | 13 |
| 9. | देवर-भाभी | 14 |
| 10. | ननद-भाभी | 15 |
| 11. | मन मंदिर के दर्पण में | 16 |
| 12. | निराली दुनिया | 17 |
| 13. | विडंबना | 18 |
| 14. | कोई गीत सुनाओ | 19 |
| 15. | अखबार | 20 |
| 16. | गणेश वंदना | 21 |

# भूमिका

मुझे इन्होंने हमेशा लिखने के लिए प्रेरित किया। मैं हमेशा अपनी कविताएँ लिखने के बाद इनको सुनाया करती थी। एक दो बार संजय जी ने भी लिखने की कोशिश की। जब वो कुछ लिखते भले ही शब्द इधर उधर होते थे पर बड़ी भावपूर्ण शब्द होते थे। इस तालबंदी में दिनभर घर में बैठे बैठे क्या करें कभी इस तरह घर पर रहने की आदत नहीं थी।

मैं रोज़ कोरोना पर कुछ न कुछ लिखती और सुनाती। मुझे लिखते देख कहने लगे तुमको लिखने की आदत है इसलिए तुम फटाफट लिख लेती हो , मैंने कहा ऐसा नहीं है आप भी लिखो धीरे धीरे अच्छा लिखने लगोगे। मैंने उन्हें लिखने के लिए प्रेरित किया। अब वो रोज़ अपने समय का उपयोग लिखने में करने लगे। लिखते फिर अच्छी नहीं लगती तो फाड़ देते मैंने कहा जैसा भी है आप बस लिखो अच्छा लिख रहे हो।

एक दिन संजय जी ने लिखा अदिति की कहानी मेरी ज़ुबानी सच इतना अच्छा लिखा की आँसु ही नहीं थम रहे थे। बस उन्हें इसी तरह लिखने के लिए प्रेरित करती गई। सोचा इस आपातकाल में इनका जो सृजन है उसे एक किताब का रूप दे इन्हें सरप्राइज़ दूँ। सभी की किताबें तो छप ही रही थीं। मैंने प्रीति से बात की उसने भी हाँ कह दिया। पर समस्या ये थी की मैं इतनी सारी रचनाएँ टाईप नहीं कर सकती थी। प्रीति की मदद से ये सब संभव हो पाया टाईप करने की ज़िम्मेदारी उसने ले ली जो सबसे महत्वपूर्ण थी। प्रीति का आभार किन शब्दों में प्रकट करूँ शब्द ही नहीं हैं। जब इन्हें यह सरप्राइज़ मिलेगा तो इनका रोम रोम खिल उठेगा। तब शायद न ये अपने अश्रु रोक पाएँगे न मैं।

**अदिति रूसिया**
**उपाध्यक्ष (अंतरा शब्दशक्ति)**
**वारासिवनी**

# गणेश वंदना

हर कार्य में होता है प्रथम पूजन जिनसे
वे पूज्यनीय गणेश भगवान
रिद्धी-सिद्धी भी आकर
करती है जिनका वंदन

करने से श्रीगणेश जी का पूजन
होते उसके सारे काम,
होती तीव्र बुद्धि भी उसकी
ऐसे जिससे होते उसके काम।

श्री गणेशजी का पूजन ध्यान
इसलिए तो सबसे पहले करते,
रिद्धी-सिद्धी भी करती जिनका पूजन
गौरी पुत्र कहलाते।
हर प्रथम कार्य में पूजनीय
ऐसे गौरी पुत्र गणेश जी को वंदन।

जिसने सारे जग को बुद्धि का पाठ पढ़ाया
माता-पिता के चक्कर लगाकर कर दिया सबको अचंभित
प्रथम पूज्यनी कहलायेऐसे गौरी नंदन को बारम्बार प्रणाम।

जिन्दगी की पाठशाला का जिसने पाठ सिखलाया
ऐसे गौरी पुत्र का सारा जग दीवाना होकर
गणपति बप्पा मोरया,
जय जय कार लगवाया!

# लेखनी

नये उत्साह से
नये जोश से
नयी उमंगों से
जीवन के हर रंगों को भर दूँ
ऐसी मेरी लेखनी में
माँ सरस्वती की ताकत देना

हर शब्द तुम्हारा पावन हो जाए
मंदिरों की घंटी से
मस्जिदों की अजान से
गुरूद्वारे की वाणी से
जो आवाज आये
ऐसे मेरे जीवन की लेखनी को
तुम पावन कर देना,
मेरी लेखनी में ऐसी ताकत देना...!

# कलम में ताकत

इस कलम में
वो ताकत कहाँ से लाऊँ
अपने ही अपनों को छलते
वो बात तुम्हें सुनाऊँ
अपने ही एक दूसरे के
लहू के प्यासे हो जाते हैं
अपनी कविता में वो
बात कहाँ से लिख पाऊँ
कलयुग में सब जायज है
न नाजायज परिवारों में
वो सत्य और शांति की
बात कहाँ से लाऊँ
जिससे अपना दुखड़ा
सुनाने को दिल चाहे
मैं अपनी कविता में
वो बात कहाँ से लाऊँ...!

# रिश्ते

बच्चों की किलकारी से
गूंज उठा ये घर प्यारा,
माता-पिता के प्यार से
महक उठा जीवन सारा।

पापा-मम्मी, चाचा-चाची,
दादा-दादी, नाना-नानी,
भाई-बहन, नन्द-भाभी,
देवर-भाभी, सबका रिश्ता बड़ा अनोखा

प्यार की छोटी सी डोर
बांधकर रखती इस सब रिश्तों को
नहीं हो आशंका इन रिश्तों में
बात पुरानी सुनाता हूँ
नहीं थे जब बड़े-बड़े मकान
छोटा-सा होता था हमारा मकान
सभी मिलकर
एक साथ रहते थे
एक साथ खेलते थे
साथ बैठकर खाना खाते थे,
इतना ही नहीं
सब साथ-साथ हँसते-गाते थे।

# माँ

सारा जग जिसका
वंदन-अभिनंदन करता है,
**वो है माँ**
माँ से ही जन्मी ये सारी दुनिया
जिसने रचा इतना प्यारा संसार
माँ की ममता और करुणा की
क्या बात तुम्हें बताऊ
जिसने
अपने ही आँचल में
दूध पिलाकर तुमको
इतना बड़ा किया
सारे अरमानों को वो
अपने बच्चों में देख पाती है।
बड़े प्यार से बच्चों को सहलाती है
तो सारी जन्नत भी
फीकी नजर आती है।
माँ से बढ़कर नहीं है
इस जग में दूजा कोई भी
न तुम माँ का दिल दुखाना
नहीं तो भगवान भी तुम्हें
माफ नहीं करेगा।

# पिता

माँ के आँचल में रहकर ही
सारी खुशियाँ पाई
माँ से बढ़कर प्रथम गुरु कोई नहीं
जिसने हमें चलना सिखाया
आगे बढ़ना सिखाया,

बात इतनी ही बातों पर
आकर नहीं रुकती
उससे भी बढ़कर
पिता ने अपना फर्ज निभाया है।

सारी दुनिया के चाल-चलन की
पाठशाला का पाठ पिता ही हमें पढ़ाता है।
सब रिश्तों से भी बढ़कर
पिता होने का फर्ज निभाता है।

# भाई

बात कहाँ से शुरु करूँ
रिश्तों से भी बढ़कर रिश्ता
प्यार का कहलाता है

बात पुरानी है
पर लगती बड़ी सयानी है
आज भी ये बात है

इस बात में भाई से भी बढ़कर
रिश्ता भाई का कहलाता है
अपनों ने तो फर्ज निभाया
पर गैरों ने भी
अपनों से बढ़कर फर्ज निभाया

छोटा सा शब्द है
दो अक्षर का भाई
इस युग में भी लोग देते उपमा
मानों हैं लक्ष्मण-रघुराई!

# बहन

नाजुक सा है ये रिश्ता
बिन कहे बन जाता है
भाई बहन का ये प्यार
एक छोटी सी रेशम की डोर
आकर भर जाती है।

कितने ही रिश्ते बनते बिगड़ते देखे हमने
पर ये रिश्ता भी अनोखा नज़र आता है
कृष्ण-द्रौपदी का भाई-बहन का रिश्ता
साड़ी का छोटा सा टुकड़ा
लाज बचाने के काम आता है

जब तक ये दुनिया रहेगी
ये रेशम का रिश्ता
बहन की रक्षा कवच बन कर
हमें याद दिलाता रहेगा।

# देवर-भाभी

माँ से बढ़कर भी
रिश्ता मैंने ऐसा पाया
अपनी भाभी में ही मैंने
माँ की छवि को पाया।

नोक-झोक के इन रिश्तों की
कहानी बड़ी है पुरानी
देवर-भाभी को न छेड़े
तो सबने बात अधूरी मानी।

माँ की ममता के रूप में
देवर ने भाभी को पाया
इसलिए तो भाई से बढ़कर
भाभी का रिश्ता कहलाता है।

# ननद-भाभी

खट्टी-मीठी यादों से भरा
ये रिश्ता कहलाता है,

ननद-भाभी का ये रिश्ता
बड़ा अनोखा नज़र आता है।

बात-बात पर गुस्सा हो जाना
ननद का ये रुप पुराना है
बात-बात पर भाभी को
रूठी ननद को मनाना है।

रुठता-मनाता
ननद-भाभी का ये रिश्ता
जिसमें तकरार में भी
प्यार ही प्यार समझ आता है।

# मन मंदिर के दर्पण में

मेरे मन मंदिर के दर्पण में
अपनी छबि देख
कुछ ऐसा,
गीत सुना जाना,..

कान्हा कौड़ी साथ न जानी है
इस जीवन में
चाहिए यह बात
हमें समझ जाना,

हिलमिलकर रहना तुम
आपस में न रखना कोई बैरभाव
झूठी माया के चक्कर में पड़कर,
अपना जीवन नहीं गंवाना,

सौ बातों की एक बात
मैं तुम्हें बतलाता हूँ
प्रेम, शाँति, सत्य, अहिंसा,
श्रृद्धा के भावों से भरकर
जग को ये पाठ पढ़ाकर जाना।

# निराली दुनिया

छोटा सा जीवन है
करना है बड़े कुछ काम
ये दुनिया बड़ी निराली है
अपनों से ही अपनों को लड़वा देती है

यही तो
जीवन का चक्रव्यूह है दोस्तों
हम उसमें फंसते चले जाते हैं
अपनों से ही छले जाते हैं

ये कैसी प्रभु
तुमने दुनिया बनाई
यही तो खेल निराला है
इस जिंदगी का!

# विडंबना

ये कैसी विडंबना है
कोई तेरे दीदार को तरसे
कोई मेरे प्यार को तरसता है,
कोई तेरे प्यार को तरसता है।
ये कैसी उलझन मेरे मन कि,
इसे तुम समझती हो
इसे मैं समझता हूँ

मेरे पास होकर भी दूर नज़र आता है
तुम दूर होकर भी पास नज़र आते हो।
ये कैसी बेवफाई है
जिसे मेरा दिल समझता है
या तेरा दिल समझता है!
ये कैसे दिल के रिश्ते हैं
इसे तुम समझती हो
इसे मैं समझता हूँ।

ये हकीकत है जिन्दगी की
इसे तुम समझते हो
इसे मैं समझता हूँ!

# कोई गीत सुनाओ

सारा जग जगमगा उठा है
नाच रहा है धरती-अंबर
धरती अंबर से कह रही है
प्यारा सा कोई गीत सुनाओ

प्यारी कोयल की कुह-कुह से
धरती अम्बर नाच रहा है
मोर, पपीहा के मन को
कोयल का गीत सुनाई दे रहा है
वे नाच रहे हैं।

भंवरों की गुँजन
घुँघरु सी सुनाई देती है।
रंग बिरंगी तितली भी
मनको महका रही है।
फूलों के अधरों पर बैठ
वो भी नया गीत सुना रही है

अब आएगा नया सवेरा
सब मिलकर फिर से
वही गीत गाऐंगे
हम जियेंगे ए वतन तेरे लिए...!

# अखबार

मेरा जीवन कोरा कागज था
मैंने इस जीवन को तुम्हें सौंप दिया,
अच्छी बातें लिख दो इस जीवन में
या बुरी बातें लिख दो इस जीवन में
कलम तुम्हारे हाथों में है
पर कोई न ऐसी बात लिखना
जिससे किसीका दिल दुखे
मैने तुम्हें कोरे कागज के रूप में
अपना जीवन सौंपा था
पर तुमने तो इस कलयुग के
काले कारनामों को ही लिख डाला है।
अब नहीं मिटा सकता
जो तुमने मुझ पर
जो ये काली करतूतों को लिख डाला
अब तुम्ही बताओ
हे! मानव
अब इस जीवन को मैं
कोरा जीवन कैसे बनाउंगा?

**हिन्द व हिन्दी का सम्मान**
**है प्रमाण देशभक्ति का**
**आइए करें**
**सृजन शब्द से शक्ति का**

रचनाकार

## संजय रूसिया

वार्ड नं. १४,
केशव इंग्लिश स्कूल के पीछे
जैन मोहल्ला, वारासिवनी
Email- sanjayrusia.sr@gmail.com
9425875324


२५ मार्च का वह दिन जिस दिन लॉकडाउन की घोषणा की गई, तब ऐसा महसूस हुआ कि बहुत ही विकट समय आने वाला है। ऐसी भयावह बीमारी के समय जितना ज्यादा सावधानी बरती जाये उतना ही कम महसूस होता है। ऐसे समय मे जब सूचना मिली कि हमारी बहू डॉ. प्रीति समकित सुराना अंतरा शब्दशक्ति के प्रकाशन में कुछ रचनाकारों की रचनाऐं ईप्रकाशन के जरिये प्रकाशित करने वाली है तब अत्यंत खुशी हुई एवं डर भी लगा कि एक तो वैसी भी स्वास्थ्य ठीक नहीं उपर से ऐसा काम कर रही है। किंतु काम तो उनके लिए दवा जैसी ही है। अतः इस शुभ कार्य के लिए अंतरा शब्दशक्ति के संरक्षक होने के नाते डॉ. प्रीति सुराना एवं समस्त अंतरा शब्दशक्ति परिवार को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।


पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-211-1

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/